अन्तरा-शब्दशक्ति

यादों के पन्ने

काव्य संग्रह

डॉ. गुरजीत रैखी

यादों के पन्ने

(काव्य संग्रह)

डॉ. गुरजीत रैखी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-81-9"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९

(मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१९- डॉ. गुरजीत रैखी

आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी

मूल्य - ६०.०० रुपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

YADON KE PANNE BY DR GURJEET RAIKHY

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका
यादों के पन्ने

शब्दों को मोतियों की तरह पिरोकर, माला की तरह गूँथकर या भावों को सहजता से शब्दों में ढालकर आसानी से अभिव्यक्त कर देना हर किसी के लिए आसान नहीं होता। भाव और शब्द सबके पास होते हैं पर कह देने का तरीका कुछ अलग सा हो जाए तो कविता बन जाती है। ये हुनर सब में नहीं होता और खुशकिस्मत है मेरी सखी डॉ. गुरजीत रैखी जिसे ईश्वर ने यह हुनर दिया। मेडिकल की पढ़ाई के दौरान भी उनके इस हुनर की खबर हम सभी सखियों को थी पर तब से अब तक कभी सोचा नहीं था कि एक दिन तकनीकियों के विकास का एक अनूठा फायदा हमें मिलेगा और जिन सहेलियों को सिर्फ याद करके और कभी-कभी फोन पर बात करके खुश हो लेते थे आज उनसे पल-पल की बातें साझा करते हैं। सुख दुख बांटते हैं। बचपन और पुराने दिनों को फिर से जी लेते हैं।

व्हाटसप समूह में इसी के चलते डॉ. गुरजीत की डायरी के कुछ पन्ने यादों के पिटारों से बाहर निकल आए और उसी दौरान प्रीति से अन्तरा शब्दशक्ति का कार्यक्रम वारासिवनी में करने की बात चल रही थी। तभी मन में विचार आया कि इन पन्नों को पुस्तक रूप में प्रकाशित करवा कर डॉ. गुरजीत को सरप्राइज दिया जाए।बहुत खुश हूँ कि अपनी दोस्त की आँखों में छुपा हुआ एक सपना जो मैं देख पाई और उसे सच करने का मौका मुझे मिला। यादों को चिरस्थायी रूप में सहजने का अनमोल माध्यम होती है पुस्तकें। बस इसी विचार का साकार रूप है डॉ. गुरजीत रैखी की पुस्तक "यादों के पन्ने" जो दोस्ती की यादों की अनमोल सौगात है। इसी बहाने हम

सभी पैंतालीस साल पुरानी सहेलियों को भी मिलने का मौका भी मिलेगा। मैं बहुत खुशनसीब हूँ कि एक पैंतालीस साल पुरानी दोस्त के सपने को साकार करने में सहयोगी बनी मेरी मेरी इक्कीस साल पुरानी दोस्त और बहू प्रीति सुराना। धन्यवाद प्रीति इन सब पलों के लिए।

डॉ. गुरजीत को ढेर सारी शुभकामनाएँ और बधाईयाँ 'यादों के पन्ने' के साथ।

सस्नेह

डॉ. भारती सुराना
एम.बी.बी.एस.- डी.जी.ओ.
(स्त्री रोग विशेषज्ञ)
भारती नर्सिंग होम एवं सोनोग्राफी सेंटर
वारासिवनी,
जिला बालाघाट (मप्र)

अनुक्रमणिका

	भूमिका	5
1.	माँ कभी नहीं मरती	7
2.	उड़ान - मेरे विचारों की	8
3.	कुछ वक्त छोड़ दो	9
4.	दिल के करीब - इतने पास	10
5.	यादों का काफिला	11
6.	मेरी रूह का इक हिस्सा कैद है	12
7.	जीवन मेरा - मरूस्थल बन गया	13
8.	इक इक पल	14
9.	रूखी रूखी सी हो गई जिंदगी	15
10.	वो वक्त कितना अच्छा था	16
11.	ओ माँ	18
12.	गुजरा यहाँ हर साल है	19
13.	इक वक्त था	20
14.	मन आज फिर भारी सा है	21
15.	इक तसल्ली है जिंदगी में	22
16.	यह इक अहसास था	23
17.	फिर खोली अलमारी अपने अतीत की	24
18.	इक और सुबह	25
19.	जिंदगी हाथों में इकट्ठी हुई रेत की तरह	26
20.	सैकड़ों जवाबों में खुद को तलाशती हुई	27
21.	ख्वाब	28

22. मै नारी हूँ तो क्या हुआ 29
23. इक धुला सा आसमान 30
24. खामोशी बोलती नहीं 31
25. कुछ धुंधले से साये 32
26.

माँ कभी नहीं मरती

माँ कभी नहीं मरती
माँ सदा सलामत रहती है,
वो कभी नहीं मरती
माँ हर जगह - हर बर्ताव में
हर संस्कार में मौजूद है,
माँ का सिमरन करना - भगवान का सिमरन
माँ बच्चे को जन्म देने वाली धरती पर
चलता फिरता भगवान है
अपनी जिंदगी दुसरों की जिंदगी में किस तरह जीते हैं
इसका नमूना है माँ -समुंदर कभी नहीं मरता
उसी तरह माँ का सिमरन भी कभी नहीं खत्म होता
समुंदर की लहरों जिस तरह हम भीग से जाते है
माँ के सिमरन से - तन मन दोनों भीग जाते हैं।
सारी दुनिया में फैली हुई लालसाओं, कामनाओं,
लालच के बिना जीना सिखाती है माँ..!

उड़ान- विचारों की मेरे

उड़ान- विचारों की मेरे
है कभी आसमान जितनी
पर अफसोस
उड़ कर ऊँचा
ऐसा गिरते हैं नीचा
कि जाती हूँ पहूँच
पाताल की गहराईयों में
और औंधे मुंह पड़े-पड़े
सोचती हूँ
जब गिरना ही था
तो क्यों कि चेष्ठा
ऊपर उड़ने की
और यह सोचकर जब
करवट बदलकर देखती हुँ
वो घुला हुआ नीला आसमान
इक शांत सी उज्जवल वादियां
और फिर शुरू हो जाती है
वही उड़ान-और नीचे गिरने की
दोहराती है.. जाने किसी पल!

कुछ वक्त छोड़ दो

कुछ वक्त छोड़ दो
जिन्दगी में कुछ जज्बात बोने दो
हम आगे जायेंगे
इक तमन्ना भी हमारी-उसे पूरा करने की चाह में
उसे हकीकत बनाने की चाह में
हमें कुछ राह दो
कुछ शक्ति दो
अपने ख्वाबों की तस्वीर
पूरी बनाकर जायें।
ये चाहते हुए भी इस अनजान सफर पर
चल तो पड़े हैं
शायद तुम इस मंजिल पर
हम पहुंचाऐं तो..!

दिल के करीब-इतने पास

दिल के करीब-इतने पास
सिर्फ एक बेटी होती है
इक बेटी
जो आपके दिल के हर खुशी
हर गम को
अपने आप में महसूस करती है
अपने दिल में बिना बताये
हर गम को छुपा लेती है
हर खुशी उजागर करती है
शायद इक बेटी ही है-
जो दिल के इतने करीब होती है
शुक्र है भगवान का जिसने इस दिल में
और इक दिल दिया है।
इस दिल की धड़कन को सदा आबाद रखे ।

यादों का काफिला

यादें
कुछ बीती जिन्दगी की
कुछ अपनों की
अपने पलों की
उन पलों को आज भी
इस परत दर परत खोलकर देखा
उन पालों में आज भी
सब कुछ वही है
कुछ भी बदला नहीं है
उन पलों में किरदार भी वहीं है
कुछ धुंधलाया सा भी नहीं है
कुछ भूला भी नहीं है
पर आज हमारे पास वह पल नहीं है..!

मेरी रूह का इक हिस्सा कैद है

मेरी रूह का इक हिस्सा कैद है
आज भी
मेरे अपने पुराने शहर में
आज भी रोता घुमता रहता है
मेरा अतीत
मेरे शहर के इक कमरे में
आज भी रोता घुमता रहता है
इस दीवार से दूसरी दिवार वह भटकता रहता है।
मेरे कुछ मरे हुए सपने
कुछ घुटी-घुटी सिसकियां
आज भी इन्हें सुन सकती हूँ,
वो इक प्यार का स्नेह का भुलावा
खहिशें चीखने लगती है
जी करता है-रूह के इस कतरे को
आजाद कर दूँ - उस कमरे से
अब भी बेचैन रहती हूँ,
उससे मुक्त होना चाहती हूँ,
उस कमरे से भटकती रूह को
आजाद करना चाहती हूँ।

जीवन मेरा - मरूस्थल बन गया है

जीवन मेरा-मरूस्थल बन गया है
सहारा का
जहां कुछ भी नहीं मिलता
कैक्टस के सिवा
ये मेरे आसूं भी क्या सीचेंगे
ये तो गला देते हैं
जंगली पौधों को भी
जीवन में मेरे चलने लगी है गरम हवाऐं
जो जला देती हैं-सारा तन
और जला देती हैं-आंखें
कब से तमन्ना है
ठंडी हवा में बहने की
प्यार से सींचने की
इक गुलाब के पौधे को
सह लूंगी यदि तेज हवायें भी आये
यदि कहीं से मिले
कुछ उपजाऊ मिट्टी।

इक इक पल

इक इक पल
आज यूं गुजर रहा है
जाने पैरों में बेडिया डाल दी गई है
न ही हम इस बोझ को उठाये चल सकते है
और न ही हम रूक सकते हैं।
रूके हुए पैरों पर- बेडियों का भार
बोझिल सा मन
कैसे चले कहां रूके
एक तुम- सिर्फ तुम पर ही विश्वास
जिसका सहारा ले सकते हैं!

रूखी रूखी सी हो गई जिंदगी

रूखी रूखी सी हो गई जिंदगी
किनमिन सी जिंदगी
सुलझन न सुलझेगी
उलझन सी जिंदगी
ना दिशा है न सोच है
महकती सी है जिंदगी
काले अंधेरो में घिर गई
उजाले सी जिंदगी
पत्थर जैसी हो गई है
धड़कन सी जिंदगी
चुप -चुप और खामोश है
झांझर जैसी जिंदगी।

वो वक्त कितना अच्छा था

वो वक्त कितना अच्छा था
जब घर की चार दिवारों से
नारी की अर्थी निकाली जाती थी
और चिता बड़े गौरव से जलाई जाती थी
अब घर की चार दिवारी से
अर्थी भी नहीं निकली जाती
दुष्ट जन काम तमाम कर देते है
एक नारी का नारी के अंदर ही
वर्षो तक नारी को चुल्हे चैके तक सीमित रखते थे
पर जीने का अधिकार तो था
कुछ मानवता थी हृदयों में
पर आज स्वार्थ की हद देखें
उस गृह लक्ष्मी को उसी के घर पर
खत्म कर देते हैं
नारी पर हाथ उठाना अधर्म माना जाता था
वो वक्त कितना अच्छा था ।
और आज नश्वर उठाकर उसे नारी के अंदर
ही निशाना बनाया जा रहा है
माना आज के युग को नारी समाज कहते हैं
पर समाज तो वही पुरूष प्रधान है
आज की इस नारी को - आगे आना होगा
उसे लड़ना होगा
अपने अंदर पल रहे शिशु को खुद इस
पुरूष प्रधान से भी
इक ले ली राह पर साथ-साथ
दूर चलते गये

वक्त की पहुच से दूर
धीरे-धीरे सहमे-सहमें
वक्त निकलता गया
कुछ पल हमने जीये तुम्हारे लिए
कुछ पल तुमने जीये हमारे लिए
और जाने कितने ही
अनकहे लम्हे
थोड़ी सी दूर पर पड़ाव है
जिंदगी का
शायद कुछ ठहराव सा आ जाये
इस डरती सी जिंदगी में!

ओ माँ

ओ माँ..... ओ माँ
क्या थी तुम्हारी विवशता
या थी तुम्हार क्रुरता
जो तुम इस फुल को देख न सकी महकता। ओ माँ ..... ओ माँ
कितनी खुश थी जब तुम्हारी कोख में
इस नन्हीं सी जान ने पैर पसारे थे
तुम्हारे हृदय के स्पंदन को महसूस किया, ओ माँ..... ओ माँ
तुम्हारी जैसी अपनी बनूंगी
मै भी इस पालने में झुलूंगी
तुम्हारी गोद में लोरी सुनुंगी
उस घर में डोलती महकती फिरूंगी
इस नन्हें हाथों से तुम्हें सहलाउंगी, ओ माँ..... ओ माँ
अचानक क्या हो गया
तुम्हारा वह स्पर्श खो सा गया
हृदय का बंधन टूट सा गया
कली को फुल न बनने दिया, ओ माँ..... ओ माँ
क्या इस कोख में कल फिर कोई
कली नहीं खिलेगी?
या उसे खिलने से पहले वही हशर कर दोगे, ओ माँ..... ओ माँ
फिर तो यह कोख नहीं
एक कब्रिस्तान बनकर रह जायेगी
वहाँ तो मरने के बाद दफनाया जाता है
यहाँ तो जीते जी दफनाया जाता है, ओ माँ..... ओ माँ
इस कोख को कभी कब्रिस्तान न बनने देना माँ ।

कुछ दिनो से उठ रहा है

कुछ दिनो से उठ रहा है
मन में ये सवाल
जिंदगी अपनी में
यह कैसा ठहराव है
यूं ही किसी तरह से बस
गुजरा यहां हर साल है
लेकिन क्या - सिर्फ दूसरों के लिए
जीता ये इंसान है
इन पुरानी स्मृतियों की जलराशि में
डूबा रहता है यह मन का दीप
पता नहीं मै आज खुश हूँ या उदास
हां इतना जरूर है
मै जीये जा रही हूँ,
अपने ही आसपास ।

इक वक्त था

इक वक्त था
जब हमने सपने देखे थे
सात समुंदर पा करेंगे
और हम हर वक्त खुश रहते थे
नये ख्वाब दिन-प्रतिदिन मन में मचलते थे
पर आज
इतने समय के बाद
जब आखें खुली तो पाया
हम आज उम्र के उस दौर पर है
जब सारे सपने अधुरे रह गये
पर विचार-आज भी मचलते हैं
जिंदगी और मौत के बारे में सोचते हैं
जिंदगी में शांति की खोज करते हैं
यह मन छोटा और डरपोक सा हो गया है
झुर्रियों वाले हाथ हो गये हैं
और जब आंखे खोलकर देखा तो पाया
कागज बिखर गये हैं
कलम मुड़ गई है
पर जिंदगी में जीने का सलीका आने लगा है ।

मन आज फिर भारी सा है

मन आज फिर भारी सा है
आज फिर शिकायत की गुजरे जमाने से
घर पर रखी पुरानी अलमारीयों के कुछ
दराज खुलते हैं - तो यूं महसूस होता है
मानो गुजरे सालों की चुप्पी से
कोई लम्हा खींच लिया हो -
दवाजा खुलता है - तो यादों के कबूतर
फड़फड़ाये से उड़ने लगते हैं।
फिर बड़ी देर लग जाती है ..
उन्हें वापस पकड़कर बंद करने में
बस इसी डर से - अरसे नहीं खोला
इन दराजों को
कुछ पुरानी चिठ्ठीयां - कुछ ग्रीटिंग भी
और कुछ पुराने खत हैं न
इन खतों में कुछ सीलन ज्याद है
शायद इनमें नमीं बहुत है।

इक तसल्ली है जिंदगी में

इक तसल्ली है जिंदगी में
सब कुछ थोड़ा सा सब कुछ मिला है
पर चंद सिक्कों में ही बीत चली जिंदगी है
कुछ अपने कुछ परायों के बीच ही बीत चली जिंदगी
कुछ नफरत और कुछ प्यार में बीत चली जिंदगी
चादर देखकर पैर ना पसारे गये हमरे
कुछ घुट घुटकर तरसे बीत गई जिंदगी
दूख में - सुख में भी तेर साथ बीत चली जिंदगी
इस जिंदगी में कुछ खामियां तो रही
पर कुछ अच्छा पाने के इंतजार में
बीत चली जिंदगी ।

यह इक अहसास था

यह इक अहसास था
खुद का
या स्वपन था
कुछ बदला हुआ माहौल था
कुछ पुरानी यादें थी
पर फिर भी दे गया अपनी कसक
गुम से हो गये हम
उन पुरानी यादों और इन नये ख्यालो में
उन यादों से न आजाद हो सके हम
और न ही उन ख्यालों से दूर जा सके।

फिर खोली अलमारी अपने अतीत की

फिर खोली अलमारी अपने अतीत की
आज भी गंध बसी हुई है
अपने अतीत की
शब्द शब्द याद है
रंग-रंग घुले हैं
पृष्ठ - पृष्ठ जिंदा है
डायरी में इस शाम की
इक गीत की
उन यादों की सैलाब की
कपड़ों के तहों के बीच - आज भी पड़ी है
आखें भींचकर पड़ी थी
खोलकर पलकें देखा
पन्ने - पन्ने पर लिखी
इक लंबी कहानी - हम सब की!

इक और सुबह

इक और सुबह
सब कुछ बदल चुका है
सब कुछ टूटता जा रहा है।
मेरे आसपास दर्द बहूत है
यूं लगता है दर्द की चाह भी
खुद ही की होगी ।
ओर आज भी वहीं खड़ी हूँ,
जिंदगी के मोड़ भी
कितने अजीब होते हैं
कुछ रूक रूककर चलते है
और शामिल होते जाते हैं
नये दर्द
बढ़ते चले जाते है
नये जख्मों के साथ
नये अहसास
नये जज्बात
कुछ सुलगती और खुरदरी
परछाईयां अपनों की
साथ -साथ चलती जाती है ।

जिंदगी हाथों में इकट्ठी हुई रेत की तरह

जिंदगी हाथों में इकट्ठी हुई रेत की तरह
पकड़ने जाओ, और फिसलती जाती है।
कसकर पकड़ने की तमन्ना में
रेत फिसलती ही रहती है।
कुछ देर सारी जिंदगी की यादें
कुछ टूटते हुए रिश्ते
कुछ बुझती सी ख्वाहिशें
कुछ उभरते हुए दर्द
इस रेत के मैदान मे
हम रोक न पा रहे है खुद को
न ही कुछ दूर चल सकते है
और न ही हम रूक सकते हैं इस रेत के घर में ।

सैकड़ों जवाबों में खुद को तलाशती हुई

सैकड़ों जवाबों में खुद को तलाशती हुई
भटक रही थी
जिंदगी के इस राह पर
अचानक एक मोड़ पर
यूं ही दूर भागते हुए इक ठकराव हुआ
मेरा और इक अधुरे से रिश्ता का।
दो अधूरे मिले और कुछ समय के लिए
इक दूसरे को पूरा किया
और फिर इक ठहराव सा आ गया
शामें बीतनेलगी चांद ढलने लगा
और सवालों के जवाब खामोशी में तबदील हो गये
फिर इस दिन
कुछ देर तक पूरा होने के बाद
रिश्तों ने अपनी राहें बदल ली
फिर से कुछ अधूरा सा रह गया
और आज भी भटक रहे हैं
अपने अधुरे को पूरा करने के लिए ।

अपनी तमन्नाओं को

अपनी तमन्नाओं को
अपने ख्वाबों में पूरा करते हैं
जाने कौन सी तमन्ना
कब हकीकत मे पूरी हो
इसी इंतजार में हम सिर्फ
ख्वाब ही देखते हैं ।
तमन्नायें कब खत्म होती हैं
इक मरती है - तो इक जन्म
ख्वाब भी मिटते जाते
बनते चले जाते हैं!

मै नारी हूँ तो क्या हुआ

मै नारी हूँ तो क्या हुआ
नहीं किसी से हारी हूँ
मै पार समुंदर कर जाऊं
मै लहरों पर भी तर जाऊं
इतनी कमजोर मै नहीं
इस तूफा से डर जाऊं
जीवन के हर तुफा से
पार उतरना आता है
गर हूँ, मै चट्टान सी
पर मुझे पिघलना आता है
हाथों की लकीरों से मुझे
लेख बदलने आते हैं
कितने ही वेद पुराण
नारी की महिमा गाते हैं
आखों में है ममता भरी
पर इक आग का दरिया अंदर
सब सुनकर भी चुप रहती हूँ
पर यह न सोचो में हारी हूँ

इक धुला सा आसमान

इक धुला सा आसमान
हर शाम
मेरे नन्हें से वजूद को मटमैला सा कर जाता है
हर शाम - इक अनजान रिश्तों से डरकर
निकल जाते है - चंद लम्हें तलाशते हुए
दूर भाग जाते हैं - भीड़ में
शायद यहां भीड़ में मेर वजूद कुम जाये
कुछ घंटो के लिए - भीड़ में हम खो जायें
पर अफसोस
भीड़ में शोर होता है
ठहाके भी होते हैं
पर रोक नहीं पाते - मेरी उदासीयों को
इन नक्रोग्नी उम्मीद भी साथ चलती है
यूं लगता है ख्वाहीशें सहम गई हैं
जरूरतों ने ज्यादा ऊची आवाज में बात..!

खामोशी बोलती नहीं

खामोशी बोलती नहीं
रिश्ते बोलने नहीं देते
रिश्तों का खामोशी से
अजब का नाता है
रिश्ते कभी जिंदगी को जोड़ते हैं
रिश्ते ही जिंदगी को तोड़ते हैं
पहले जोड़ते है - फिर तोड़ते हें
इस जोड़ने और तोड़ने की
जुगलबंदी में जिंदगी-इस उम्र बीत जाती है
और इंसान बेचारा
इस टूटते और जुड़ते रिश्तों में
तुपका-तुपका रिसदा रहता है
बेजार सा
कुछ रिश्ते अजीब होते है- दूर होकर भी करीब होते हैं
गरीब होकर भी अमीर होते है
जिंदगी की व्याकरण का अजी रिश्ता
इंसान तो ताउम्र समझ नहीं पाता
इंसान इसी उलझन में भटकता रहता है ।

कुछ धुंधले से साये

कुछ धुंधले से साये
मेरी ख्वाबों में - मेरी कल्पना में
बिखरते रहते है हर वक्त
हौते से जब नाकामियां
मुझे गले लगाती है
जिंदगी दर्द से थोड़ी छटपटाती है
मै तन कर खड़ी हो जाती हूँ
फिर इक साहस जुटाकर
इक नई दिशा में
अपने अंदर फिर से
कुछ करने की आरजू लिए
पग फिर चहकते है
मंजिल पर पहूँचकर इस सकून सा अहसास..
फिर मन में द्वंद सा उठता है
और फिर कुछ हासिल करने की चाह पलने..
तब शुरू हो जाता है
इक संघर्ष इस कमजोर मन का
और फिर ये साये मेरी कल्पना में
ख्वाब बनकर निकल आते हैं ।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. गुरजीत रैखी
पति - डॉ. कुलदीप रैखी (एम.एस. आर्थो.)
पुत्र - डॉ. छमनदीप सिंह रैखी (डी.एन.बी. आर्थो.)
पुत्रवधु - डॉ. हरप्रीत कौर (प्रसूती चिकित्सक)
पुत्री - डॉ. हर्षदीप (बाल्य चिकित्सा सर्जन)
दामाद - डॉ. बिरदाविंदर सिंह (हृदय रोग विशेषज्ञ)
शिक्षा - 1978 में एम.बी.बी.एस., 1981 में डी.जी.ओ.
ई मेल -gurjeetraikhy@gmail.com
सम्मान - बेस्ट चिकित्सक सम्मान (अधिकतम कुष्ठ रोगियों के परिवार योजना हेतु)

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-81-9
मूल्य- 60/-